

# राजकीय महाविद्यालय गोसाईंखेड़ा उन्नाव



बी. ए द्वितीय वर्ष

डॉ प्रियंका गौड़

असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र

B.A II

Economics

1st Paper

Milton Friedman

Quantity Theory of Money: A Restatement (1956)

Fisher -  $MV = PT$

$$M = \frac{PT}{V}$$

$$M = \frac{1}{V} PT$$

} Money is only  
medium of exchange

Cambridge - Marshall, Pigou

$$M_d = kPY$$

$k = \frac{1}{V}$   $k$  - saving is inverse of velocity

$T = Y$  - Total transaction is level of output

}  $M_d$  = medium of exchange + held as savings

Keynes - 3 Motives

Fisher

Cambridge

1. Transaction

2. Precaution

3. Speculation

}  $L_1 = f(Y)$  positive

$L_2 = f(r)$  negative

↙ ↘  
Bond      stock  
            shares, equity

Keynes

Friedman

Friedman :- Temporary abate of purchasing power.

Income spends on general consumption, consumer durables, income yielding assets.

$$M_d = f \left( W, r - \frac{1}{r} \cdot \frac{dr}{dt}, \frac{1}{P} \cdot \frac{dP}{dt}, h \right) P$$

$W$  = Wealth - Human Wealth and Non human wealth

- Human skill, Physical and financial assets

$r - \frac{1}{r} \cdot \frac{dr}{dt}$  = change in the yield from the assets

$\frac{1}{P} \cdot \frac{dP}{dt}$  = change in price level

$h$  = Ratio in which you hold human wealth and Non H.W

$P$  = General Price level

$r \uparrow \rightarrow$  Price of bond  $\downarrow$

Investment in bond  $\uparrow \rightarrow$  Investment in Equity  $\downarrow$   
Partial differentiale - other thing remain constant higher the return on other assets, lower the demand for money

$$\frac{\partial M_d}{\partial \left[ r - \left( \frac{1}{r} \right) \left( \frac{dr}{dt} \right) \right]} < 0 \quad (\text{Negative Relation})$$

$$\frac{\partial M_d}{\partial \left[ \frac{1}{P} \cdot \frac{dP}{dt} \right]} < 0 \quad (" \quad ")$$

because rate of change in price will inversely influence real value of money and thus demand for money (in cash form).

$$\frac{\partial M_d}{\partial W} > 0 \quad (\text{Positive Relation})$$

More wealth generates more demand for money

Note \* Bond is a debt obligation  
Equity is a share of ownership in the company

## Objectives

1. मुद्रा की भाग के निर्धारण चरों की खोज
2. यह जात करना कि मुद्रा की भाग फलन स्थाई है अथवा नहीं  
फ्रीडमैन ने मुख्य रूप से 3 चर बताये, बाँचे को अन्य पर बताया है।

1. Total wealth to be held
2. Price and return on wealth
3. Division of wealth in human and non human form

## Form of Assets

1. Money or Luxury Good
2. Bond (Debtenture)
3. Equities (Share)
4. Physical and Non Physical goods
5. Human Capital

Demand for money function for Individual

$$\frac{M}{P} = f \left( Y, \omega, R_m, R_b, R_e, \frac{1}{P} \cdot \frac{dP}{dt}, u \right)$$

M - Total stock of money demand

P - Price level

Y - Real Income

$\omega$  - Friction of health in non human form

$R_m$  - Expected nominal rate of return on money

$R_b$  - Expected rate of change of prices of Good

u - Variables others than income

Note -> Friedman Theory में Income, Permanent form में study की गयी है।

श्रीलाले विश्वविद्यालय के अध्यापक मिल्टन फ्रीडमैन ने मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त के पुनः प्रतिपादन में यह बल देकर कहा कि मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त वास्तव में मुद्रा की मांग का सिद्धान्त है। यह उत्पादन या मुद्रा आय या कीमत स्तर का सिद्धान्त नहीं है।

फ्रीडमैन का मुद्रा की मांग का सिद्धान्त एक पूर्ण अथवा सम्पत्ती सिद्धान्त है क्योंकि यह मुद्रा को एक परिपूर्ण अथवा पूर्ण वस्तु मानता है। अन्तिम सम्पत्तीधारक की तरफ से मुद्रा की मांग एक टिकाऊ वस्तु की मांग की तरह होती है।

फ्रीडमैन के मुद्रा की मांग सिद्धान्त के प्रमुख तत्व:-

1. मुद्रा की मांग फलन स्थिर है। मुद्रा की मांग को प्रभावित करने वाले चरों में परिवर्तन की सम्भावना है, परन्तु दीर्घकाल में यह एक निश्चित दर से बढ़ती है जिसका अनुमान लगाया जा सकता है।
2. मुद्रा की पूर्ण वास्तव चरों से प्रभावित होती है।
3. फ्रीडमैन ने 'थार्थ' आय को मुद्रा की मांग का मुख्य निर्धारक माना है। मुद्रा की मांग की आय व्यय इकाई

से अधिक होती है। अर्थात् एक इकाई आय बढ़ने पर  
M<sub>1</sub> 1.81 बढ़ता है।

4. फ्रिडमैन ने परम्परागत सिद्धांत को ही स्वीकार किया है।  
मुद्रा का मांग भुगतानों के लिए का जाती है। कीमत स्तर  
के सम्बन्ध में मुद्रा का मांग लैच इकाई के बराबर  
होती है।

5. फ्रिडमैन ने मुद्रा को एक परिसम्पत्ति माना है। इस प्रकार  
यह सिद्धान्त सम्पत्ति का सिद्धान्त है इसलिए इसे  
'Asset Theory of Money' / 'Portfolio Approach to Demand  
for Money' भी कहते हैं।

6. फिशर के विपरीत, फ्रिडमैन चलनपेरा को ना तो  
संस्थागत वारक मानते हैं, ना ही गणितीय रूप  
से स्थिर। वरिष्ठ यह इसे मुद्रा का मांग और विभिन्न  
चरो के बीच फलनात्मक सम्बन्ध मानते हैं। इन चरो में  
परिवर्तन के साथ चलनपेरा चक्रिय एवं दीर्घकालिक  
प्रकृति दोनों प्रकार से बदलता है।

7. फ्रिडमैन मुद्रा के रूप में मुद्रा को मांग को जानने से अलग रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे सम्पत्ति के सभी शोरी को से प्राप्त आय के व्यापक दृष्टिकोण में लेते हैं।

8 इस विश्लेषण में मुद्रा संचय को दो भागों में -

- (i) Bond / Equity को मुद्रा के स्थान पर संचय पर प्राप्त व्याज दर (r)
- (ii) Nominated Money Balance

उपरोक्त तन्त्र में विपरीत सम्बन्ध है जब मुद्रा को संचय लागत बढ़ती है तो मुद्रा संचय कम होता है और इसके विपरीत भी।

9. फ्रिडमैन मुद्रा को संचय मात्रा पर व्याज दर का प्रभाव मानते हैं पर जानने से कम। इसी प्रकार निम्न स्तर में यदि मुद्रा संचय को बढ़ाया जाता है। यह मुद्रा के वास्तविक मूल्य को बढ़ाता है तथा अन्य सम्पत्ति के वास्तविक मूल्य को बढ़ाता है। संचय को दिए हुए समय में स्थिर माना गया है।

## निष्कर्ष :-

1. माइक्रो नीति प्रभावकारी है।
2. अध्ययन में जो चयन परिवर्तन चलन वेग (G) में आ रहे हैं उन्हें बालक शक्तियों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उसे सही करने के प्रयास में स्थिरता के स्थान पर आस्थिरता आ सकती है।  
इसके स्थान पर दीर्घकालीन प्रवृत्ति का अध्ययन करने उसके अनुसार Ms और Md को समायोजित करना चाहिए और राष्ट्रीय आय को वृद्धि दर से थोड़ा अधिक दर पर Ms बढ़ाना चाहिए।

Miyamoto Gawa